वक्रतुण्ड महाकाय सुर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

अर्थ : हे गणेश देवता! आप विशाल रूप तथा सूर्य के समान चमकने वाले हैं। आप से आशा और माँग है कि हमेशा हमारे सभी कार्यों में कोई बाधा न हो॥

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥जय०॥ एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी। माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥जय०॥
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥जय०॥ पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ॥जय०॥
दीनन की लाज रखो, शम्भू पुत्र वारी। कामना को पूरा करो, ज्यों बलिहारी ॥जय०॥ जो तेरा ध्यान करे ज्ञान मिले उसको। छोड़ तुझे और भला ध्याऊँ मैं किसको ॥जय०॥

गजाननं भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्। उमा सुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ॥

MCNG-3301

वक्रतुण्ड महाकाय सुर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

अर्थ : हे गणेश देवता! आप विशाल रूप तथा सूर्य के समान चमकने वाले हैं। आप से आशा और माँग है कि हमेशा हमारे सभी कार्यों में कोई बाधा न हो॥

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥जय०॥ एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी। माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥जय०॥
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥जय०॥ पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ॥जय०॥
दीनन की लाज रखो, शम्भू पुत्र वारी। कामना को पूरा करो, ज्यों बलिहारी ॥जय०॥ जो तेरा ध्यान करे ज्ञान मिले उसको। छोड़ तुझे और भला ध्याऊँ मैं किसको ॥जय०॥

गजाननं भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्। उमा सुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ॥

MCNG-3305

श्री यन्त्रम्

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णु-धाता ॥ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ॐ॥
दुर्गा रुप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ॥ॐ॥
तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता ॥ॐ॥
जिस घर तुम रहतीं, तहँ सब सद्‌गुण आता। सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ॐ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, व्रत न हो पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ॐ॥
शुभ-गुण-मन्दिर-सुंदर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नही पाता ॥ॐ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ॐ॥

MCNG-3302

श्री यन्त्रम्

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णु-धाता ॥ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ॐ॥
दुर्गा रुप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ॥ॐ॥
तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता ॥ॐ॥
जिस घर तुम रहतीं, तहँ सब सद्गुण आता। सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ॐ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, व्रत न हो पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ॐ॥
शुभ-गुण-मन्दिर-सुंदर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नही पाता ॥ॐ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ॐ॥

MCNG-3303

श्री यन्त्रम्

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णु-धाता ॥ॐ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता। सूर्य चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ॐ॥
दुर्गा रुप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ॥ॐ॥
तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता ॥ॐ॥
जिस घर तुम रहतीं, तहँ सब सद्‌गुण आता। सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ॐ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, व्रत न हो पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ॐ॥
शुभ-गुण-मन्दिर-सुंदर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नही पाता ॥ॐ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ॐ॥

MCNG-3304

श्री शिव चालीसा

दोहा :- जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान । कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान ॥

[illegible]

नित नेम उठि प्रातः ही, पाठ करो चालीस, तुम मेरी मनोकामना पूर्ण करो जगदीश ॥

आरती श्री शिवजी की

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा । ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥ॐ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे । हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ॐ॥
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज ते सोहे । तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे ॥ॐ॥
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी । चंदन मृग मद चंदा भोले शुभकारी ॥ॐ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे । ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे ॥ॐ॥
कर मध्ये च कमंडल चक्र त्रिशूल धर्ता । जगकर्ता, जगहर्ता, जगपालन कर्ता ॥ॐ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ॥ॐ॥
त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे । कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ॥ॐ॥

श्री महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ

MCNG-3326

श्री महामृत्युंजय यंत्र

आरती श्री शिवजी की

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा । ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥ॐ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे । हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजे ॥ॐ॥
दो भुज चार चतुर्भुज दश भुज ते सोहे । तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे ॥ॐ॥
अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी । चंदन मृग मद चंदा भोले शुभकारी ॥ॐ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे । ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे ॥ॐ॥
कर मध्ये च कमंडल चक्र त्रिशूल धर्ता । जगकर्ता, जगहर्ता, जगपालन कर्ता ॥ॐ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ॥ॐ॥
त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे । कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ॥ॐ॥

श्री महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥
ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ

भावार्थ : हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें। जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाये। जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएं और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जायें।

MCNG-3327

श्री महामृत्युंजय यंत्र

आरती श्री शिवजी की

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा । ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥ॐ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे । हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ॐ॥
दो भुज चार चतुर्भुज दश भुज ते सोहे । तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे ॥ॐ॥
यक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी । चंदन मृग मद चंदा भोले शुभकारी ॥ॐ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे । ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे ॥ॐ॥
कर मध्ये च कमंडल चक्र त्रिशूल धर्ता । जगकर्ता, जगहर्ता, जगपालन कर्ता ॥ॐ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ॥ॐ॥
त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे । कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ॥ॐ॥

श्री महामृत्युंजय मंत्र

ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥
ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौं ॐ

भावार्थ : [illegible]

MCNG-3328

आरती श्री काली माता की

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली, तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।
तेरे भक्तजनों पर मैया भीड़ पड़ी है भारी, दानव दल पर टूट पड़ो माँ कर के सिंह सवारी,
सौ सौ सिंहों से है बलशाली, है दस भुजाओं वाली, दुखियों के दुखड़े निवारती, ओ मैया हम सब...
माँ बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता, पूत कपूत सुने है पर ना माता सुनी कुमाता,
सबपे करुणा बरसाने वाली, अमृत बरसाने वाली, दुखियों के दुखड़े निवारती, ओ मैया हम सब...
नहीं मांगते धन और दौलत ना चांदी ना सोना, हम तो मांगे माँ तेरे मन में एक छोटा सा कोना,
सब की बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली, सतियों के सत को सवारती, ओ मैया हम सब...

सर्वमंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते॥

आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥ जय अम्बे॥
मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको ॥ जय अम्बे॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥ जय अम्बे॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ॥ जय अम्बे॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥ जय अम्बे॥
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। धूम्रविलोचन नयना, निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्बे॥
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे, सुर-भयहीन करे ॥ जय अम्बे॥
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे॥
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों। बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू ॥ जय अम्बे॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पति करता ॥ जय अम्बे॥
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ जय अम्बे॥
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्बे॥
माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पति पावै ॥ जय अम्बे॥

MCNG-3308

श्री दुर्गा चालीसा

सर्वमंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते ॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी । नमो नमो अम्बे दुःख हरनी ॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी । तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥
शशि ललाट मुख महा विशाला । नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥
रूप मातु को अधिक सुहावे । दरश करत जन अति सुख पावे ॥
तुम संसार शक्ति लय कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ॥
अन्नपूर्णा हुई जग पाला । तुम ही आदि सुन्दरी बाला ॥
प्रलयकाल सब नाशन हारी । तुम गौरी शिव शंकर प्यारी ॥
शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं । ब्रह्मा-विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं ॥
रूप सरस्वती का तुम धारा । दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा । परगट भई फाड़ कर खम्बा ॥
रक्षा करि प्रह्लाद बचायो । हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं । श्री नारायण अंग समाहीं ॥
क्षीरसिंधु में करत विलासा । दया सिंधु दीजै मन आसा ॥

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी । महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी अरु धूमावति माता । भुवनेश्वरि बगला सुख दाता ॥
श्री भैरव तारा जग तारिणी । छिन्नभाल भव दुःख निवारिणी ॥
केहरि वाहन सोहे भवानी । लांगुर वीर चलत अगवानी ॥
कर में खप्पर खड्ग विराजै । जाको देख काल डर भाजै ॥
सोहे अस्त्र और त्रिशूला । जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥
नगरकोट में तुम्हीं विराजत । तिहुँ लोक में डंका बाजत ॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे । रक्त बीज शंखन संहारे ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी । जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥
रूप कराल कालिका धारा । सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥
परी भीड़ सन्तन पर जब जब । भई सहाय मातु तुम तब तब ॥
अमरपुरी अरु बासव लोका । तब महिमा सब रहें अशोका ॥
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी । तुम्हें सदा पूजें नर-नारी ॥

प्रेम भक्ति से जो यश गावै । दुःख दारिद्र निकट नहिं आवै ॥
ध्यावैं तुम्हें जो नर मन लाई । जन्म मरण ताको छुटि जाई ॥
जोगी सुर-मुनि कहत पुकारी । योग न होई बिन शक्ति तुम्हारी ॥
शंकर आचारज तप कीनो । काम क्रोध जीति सब लीनो ॥
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को । काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ॥
शक्ति-रूप को मरम न पायो । शक्ति गई तब मन पछितायो ॥
शरणागत हुई कीर्ति बखानी । जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा । दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो । तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो ॥
आशा तृष्णा निपट सतावे । रोग दोष मेरे निकट न आवें ॥
शत्रु नाश कीजै महारानी । सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी ॥
करो कृपा हे मातु दयाला । ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला ॥
जब लगि जिऊँ दया फल पाऊँ । तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ ॥

दुर्गा चालीसा जो कोई गावै । सब सुख भोग परम पद पावै ॥

MCNG-3309

सर्वमंगल मांग्ल्यै, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते ॥

आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥ जय अम्बे ॥
मांग, सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको ॥ जय अम्बे ॥
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ॥ जय अम्बे ॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ॥ जय अम्बे ॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥ जय अम्बे ॥
शुम्भ-निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती। धूम्रविलोचन नयना, निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्बे ॥

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे, सुर-भयहीन करे ॥ जय अम्बे ॥
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे ॥
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों। बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू ॥ जय अम्बे ॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भर्ता। भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पति कर्ता ॥ जय अम्बे ॥
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर–नारी ॥ जय अम्बे ॥
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। (श्री) मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्बे ॥

मॉं अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पति पावै ॥ जय अम्बे ॥

MCNG-3310

सर्वमंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते ॥

आरती श्री दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥ जय अम्बे ॥
मांग, सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को। उज्जवल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको ॥ जय अम्बे ॥
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे। रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ॥ जय अम्बे ॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ॥ जय अम्बे ॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥ जय अम्बे ॥
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। धूम्रविलोचन नयना, निशिदिन मदमाती ॥ जय अम्बे ॥
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे, सुर-भयहीन करे ॥ जय अम्बे ॥
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे ॥
चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरो। बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरु ॥ जय अम्बे ॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भर्ता। भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पति कर्ता ॥ जय अम्बे ॥
भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर–नारी ॥ जय अम्बे ॥
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। (श्री) मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्बे ॥
माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै। कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पति पावै ॥ जय अम्बे ॥

MCNG-3311

श्री कुंज बिहारी जी की आरती

आरती कुंज बिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥ गले में बैजयन्ती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला । श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला ।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली ।
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक चंद्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरधर...
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दर्शन को तरसैं । गगन सों सुमन रासि बरसै ।
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग ग्वालिन संग, अतुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरधर...
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा । स्मरन ते होत मोह भंगा,
बसी शिव सीस जटाके बीच, हरै अघ कीच । चरन छवि श्री बनवारी की ॥ श्री गिरधर...
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू । चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद चाँदनी चंद, कटत भव-फंद, टेर सुन दीन भिखारी की ॥ श्री गिरधर...

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का ॥प्रभु॥ सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥प्रभु॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥प्रभु॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥प्रभु॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥प्रभु॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम रक्षक मेरे ॥प्रभु॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥प्रभु॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ॐ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥प्रभु॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ॐ॥

MCNG-3312

श्री कुंज बिहारी जी की आरती

आरती कुंज बिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥ गले में बैजन्ती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला । श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला ।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली ।
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक चंद्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरधर...
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दर्शन को तरसैं । गगन सों सुमन रासि बरसै ।
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग ग्वालिन संग, अतुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरधर...
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा । स्मरन ते होत मोह भंगा,
बसी शिव सीस जटाके बीच, हरै अघ कीच । चरन छवि श्री बनवारी की ॥ श्री गिरधर...
चमकती उज्जवल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू । चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद चांदनी चंद, कटत भव-फंद, टेर सुन दीन भिखारी की ॥ श्री गिरधर...

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनसे मन का ॥प्रभु॥ सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥प्रभु॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥प्रभु॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥प्रभु॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥प्रभु॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम रक्षक मेरे ॥प्रभु॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥प्रभु॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ॐ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥प्रभु॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ॐ॥

श्री कुंज बिहारी जी की आरती

आरती कुंज बिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥ गले में बैजंती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला । श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला ।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली ।
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक चंद्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरधर...
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दर्शन को तरसैं । गगन सों सुमन रासि बरसै ।
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग ग्वालिन संग, अतुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरधर...
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा । स्मरन ते होत मोह भंगा,
बसी शिव सीस जटाके बीच, हरै अघ कीच । चरन छवि श्री बनवारी की ॥ श्री गिरधर...
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू । चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद चांदनी चंद, कटत भव-फंद, टेर सुन दीन भिखारी की ॥ श्री गिरधर...

आरती श्री बालकृष्ण जी की

आरती बाल कृष्ण की कीजै । अपनो जन्म सफल कर लीजै ॥
श्री यशुदा को परम दुलारो । बाबा की अँखियन की तारो ॥
गोपिन के प्राणन से प्यारो । इन पे प्राण निछावर कीजै ॥आरती॥
बलदाऊ को छोटो भैय्या । कनुआ कहि कहि बोले मैय्या ॥
परम मुदित मन लेत बलैय्या । यह छवि नैनन में भर लीजै ॥आरती॥
श्री राधा वर सुघर कन्हैया । ब्रज जन को नवनीत खवैय्या ॥
देखत ही मन लेत चुरैय्या । अपनो सरबस इनको दीजै ॥आरती॥
तोतरि बोलन मधुर सुहावै । सखन संग खेलत सुख पावै ॥
सोइ सुकृति जो इनको ध्यावै । अब इनको अपनो कर लीजै ॥आरती॥

MCNG-3314

श्री कुंज बिहारी जी की आरती

आरती कुंज बिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ॥ गले में बैजयन्ती माला,
बजावै मुरली मधुर बाला । श्रवन में कुण्डल झलकाला, नंद के आनन्द नन्दलाला ।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली ।
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक चंद्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की ॥ श्री गिरधर...
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दर्शन को तरसैं । गगन सों सुमन रासि बरसै ।
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग ग्वालिन संग, अतुल रति गोप कुमारी की ॥ श्री गिरधर...
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा । स्मरन ते होत मोह भंगा,
बसी शिव सीस जटाके बीच, हरै अघ कीच । चरन छवि श्री बनवारी की ॥ श्री गिरधर...
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू । चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद चांदनी चंद, कटत भव-फंद, टेर सुन दीन भिखारी की ॥ श्री गिरधर...

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का ॥प्रभु॥ सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥प्रभु॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥प्रभु॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥प्रभु॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥प्रभु॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम रक्षक मेरे ॥प्रभु॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥प्रभु॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ॐ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥प्रभु॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ॐ॥

MCNG-3315

श्री हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि। बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि ॥ बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार। बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल-धामा । अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केसरीनन्दन । तेज प्रताप महा जग वन्दन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचन्द्र के काज संवारे ॥

लाय संजीवन लखन जियाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना । लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डर ना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

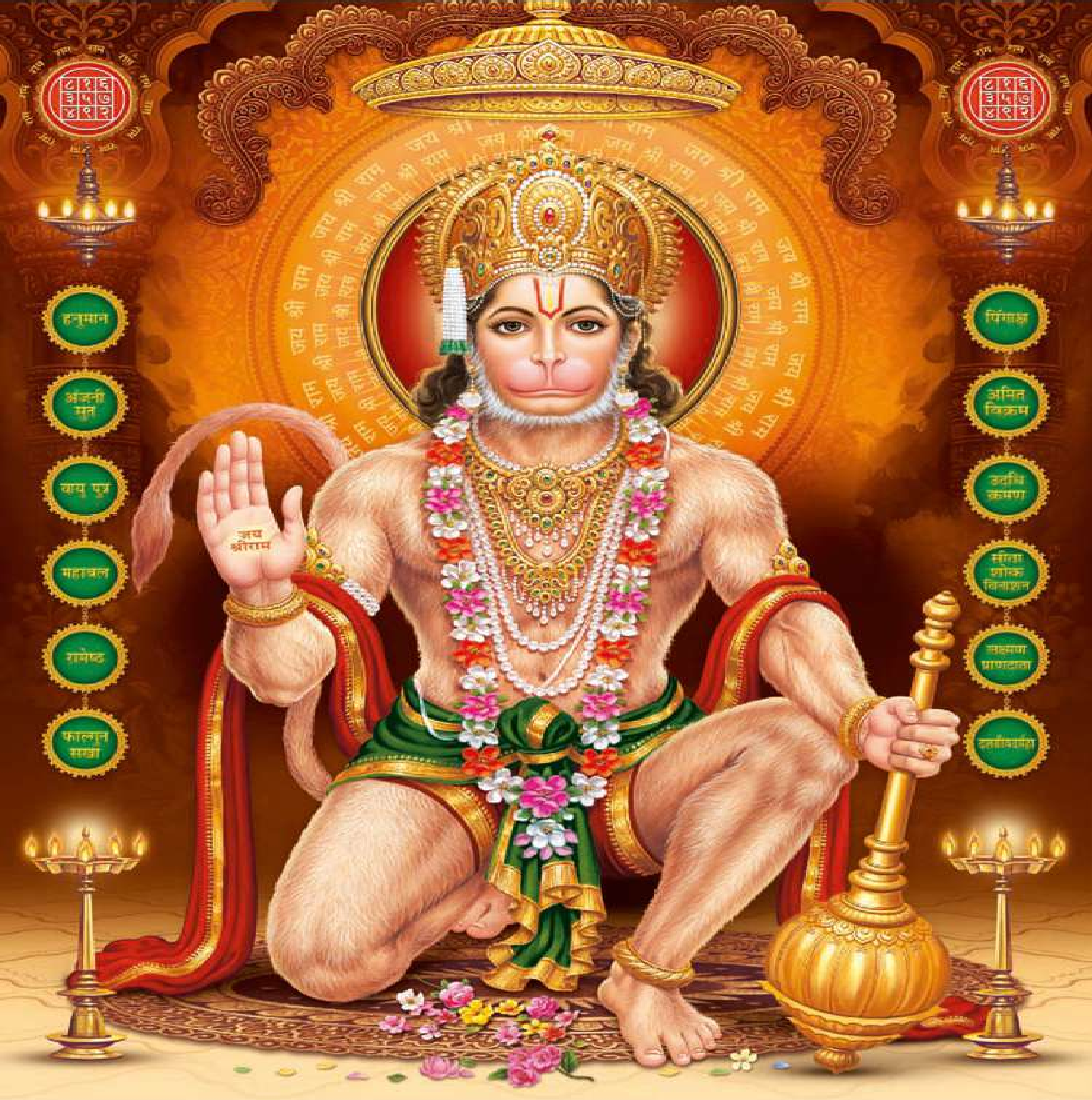

श्री हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि ॥ बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार। बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥	लाय संजीवनि लखन जियाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥	राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥	अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम दूत अतुलित बल-धामा । अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥	रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥	सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डर ना ॥	राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥	सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥	आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥	तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥	सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥	भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥	अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥	जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥	नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥	और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥
शंकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥	तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥	संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥	संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥	तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥	सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥	जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥	जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥	और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फल पावै ॥	जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥	प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥	चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥	जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥	दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥	साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥	तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

MCNG-3317

श्री हनुमान चालीसा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥ बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार। बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल-धामा । अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शंकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥
विद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

लाय संजीवनि लखन जियाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना । लंकेश्वर भए सब जग जाना ॥
जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डर ना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फल पावै ॥
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु सन्त के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥

MCNG-3318

राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे। सहस्त्रनाम तत्तुल्यं, रामनाम वरानने॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं, सीतासमारोपितवामभागम्। पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

॥ स्तुति श्री रामचन्द्र जी की ॥

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम् ।
नव कंजलोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरम् ।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम् ॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव, दैत्यवंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द, दशरथ नन्दनम् ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदारु अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर चाप धर, संग्राम जित खरदूषणम् ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर, शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम् ॥
मनु जाहिं राचेउ मिलहि सो, बर सहज सुन्दर साँवरो ।
करुणा निधान सुजान शील, सनेह जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि, सिय सहित हिय हरषी अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनिपुनि, मुदित मन मन्दिर चली ॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में, तू अकेला नाहिं प्यारे राम तेरे साथ में ।
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ॥१॥
किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा, होगा प्यारे वही जो श्रीराम जी को भायेगा ।
फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ॥२॥
जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के, महलों में राखे चाहे झोंपड़ी में वास दे ।
धन्यवाद, निर्विवाद राम राम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ॥३॥
आशा एक रामजी से दूजी आशा छोड़ दे, नाता एक रामजी से दूजा नाता तोड़ दे ।
साधु संग राम रंग अंग अंग रंगिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ॥४॥

MCNG-3306

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाग्डं, सीतासमारोपितवामभागम्। पाणी महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनांथम् ॥

!! स्तुति श्री रामचन्द्र जी की !!

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम् ।
नव कंजलोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरम् ।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम् ॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव, दैत्यवंश निकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द, दशरथ नन्दनम् ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदारु अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर चाप धर, संग्राम जित खरदूषणम् ॥
इति वदति तुलसीदास शंकर, शेष मुनि मन रंजनम् ।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम् ॥
मनु जाहि राचेउ मिलहि सो, वर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील, सनेह जानत रावरो ॥
एहि भांति गौरि असीस सुनि, सिय सहित हिय हरषी अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनिपुनि, मुदित मन मन्दिर चली ॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में, तू अकेला नहिं प्यारे राम तेरे साथ में ।
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।१।
किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा, होगा प्यारे वही जो श्रीराम जी को भायेगा ।
फल आशा त्याग शुभ काम करते रहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।२।
जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के, महलों में राखे चाहे झोंपड़ी में वास दे ।
धन्यवाद, निर्विवाद राम राम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।३।
आशा एक रामजी से दूजी आशा छोड़ दे, नाता एक रामजी से दूजा नाता तोड़ दे ।
साधु संग राम रंग अंग अंग रंगिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।
सीताराम सीताराम सीताराम कहिये, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ।४।

MCNG-3307

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने। प्रणत: क्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नम:॥

श्री यन्त्रम्

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वंदे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे, दु:ख बिनसे मन का ॥प्रभु॥ सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥प्रभु॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥प्रभु॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥प्रभु॥ मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥प्रभु॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ॐ॥
दीन बन्धु दु:ख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥प्रभु॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेर ॥ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥प्रभु॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ॐ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥प्रभु॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ॐ॥

MCNG-3320

ਗਲੀ ਅਸੀ ਚੰਗੀਆ, ਆਚਾਰੀ ਬੁਰੀਆਹ॥ ਮਨਹੁ ਕੁਸੁਧਾ ਕਾਲੀਆ, ਬਾਹਰਿ ਚਿਟਵੀਆਹ॥

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ

ਜਪੁ ਜੀ ਸਾਹਿਬ

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ॥ ਜਪੁ ॥

[illegible]

MCNG-3319

ਚੌਪਈ ਸਾਹਿਬ

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹ ॥ ਪਾਃ ੧੦ ਕਬਿਯੋ ਬਾਚ ਬੇਨਤੀ ॥ ਚੌਪਈ ॥

MCNG-3321

ਜਪੁ ਜੀ ਸਾਹਿਬ

ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ॥ ਜਪੁ ॥

ਆਦਿ ਸਚੁ ਜੁਗਾਦਿ ਸਚੁ ॥ ਹੈ ਭੀ ਸਚੁ ਨਾਨਕ ਹੋਸੀ ਭੀ ਸਚੁ ॥੧॥ ਸੋਚੈ ਸੋਚਿ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਸੋਚੀ ਲਖ ਵਾਰ ॥ ਚੁਪੈ ਚੁਪ ਨ ਹੋਵਈ ਜੇ ਲਾਇ ਰਹਾ ਲਿਵ ਤਾਰ ॥ ਭੁਖਿਆ ਭੁਖ ਨ ਉਤਰੀ ਜੇ ਬੰਨਾ ਪੁਰੀਆ ਭਾਰ ॥ ਸਹਸ ਸਿਆਣਪਾ ਲਖ ਹੋਹਿ ਤ ਇਕ ਨ ਚਲੈ ਨਾਲਿ ॥ ਕਿਵ ਸਚਿਆਰਾ ਹੋਈਐ ਕਿਵ ਕੂੜੈ ਤੁਟੈ ਪਾਲਿ ॥ ਹੁਕਮਿ ਰਜਾਈ ਚਲਣਾ ਨਾਨਕ ਲਿਖਿਆ ਨਾਲਿ ॥੧॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਆਕਾਰ ਹੁਕਮੁ ਨ ਕਹਿਆ ਜਾਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੋਵਨਿ ਜੀਅ ਹੁਕਮਿ ਮਿਲੈ ਵਡਿਆਈ ॥ ਹੁਕਮੀ ਉਤਮੁ ਨੀਚੁ ਹੁਕਮਿ ਲਿਖਿ ਦੁਖ ਸੁਖ ਪਾਈਅਹਿ ॥ ਇਕਨਾ ਹੁਕਮੀ ਬਖਸੀਸ ਇਕਿ ਹੁਕਮੀ ਸਦਾ ਭਵਾਈਅਹਿ ॥ ਹੁਕਮੈ ਅੰਦਰਿ ਸਭੁ ਕੋ ਬਾਹਰਿ ਹੁਕਮ ਨ ਕੋਇ ॥ ਨਾਨਕ ਹੁਕਮੈ ਜੇ ਬੁਝੈ ਤ ਹਉਮੈ ਕਹੈ ਨ ਕੋਇ ॥੨॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਤਾਣੁ ਹੋਵੈ ਕਿਸੈ ਤਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਦਾਤਿ ਜਾਣੈ ਨੀਸਾਣੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਗੁਣ ਵਡਿਆਈਆ ਚਾਰ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਵਿਦਿਆ ਵਿਖਮੁ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਸਾਜਿ ਕਰੇ ਤਨੁ ਖੇਹ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਜੀਅ ਲੈ ਫਿਰਿ ਦੇਹ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਜਾਪੈ ਦਿਸੈ ਦੂਰਿ ॥ ਗਾਵੈ ਕੋ ਵੇਖੈ ਹਾਦਰਾ ਹਦੂਰਿ ॥ ਕਥਨਾ ਕਥੀ ਨ ਆਵੈ ਤੋਟਿ ॥ ਕਥਿ ਕਥਿ ਕਥੀ ਕੋਟੀ ਕੋਟਿ ਕੋਟਿ ॥ ਦੇਦਾ ਦੇ ਲੈਦੇ ਥਕਿ ਪਾਹਿ ॥ ਜੁਗਾ ਜੁਗੰਤਰਿ ਖਾਹੀ ਖਾਹਿ ॥ ਹੁਕਮੀ ਹੁਕਮੁ ਚਲਾਏ ਰਾਹੁ ॥ ਨਾਨਕ ਵਿਗਸੈ ਵੇਪਰਵਾਹੁ ॥੩॥ ਸਾਚਾ ਸਾਹਿਬੁ ਸਾਚੁ ਨਾਇ ਭਾਖਿਆ ਭਾਉ ਅਪਾਰੁ ॥ ਆਖਹਿ ਮੰਗਹਿ ਦੇਹਿ ਦੇਹਿ ਦਾਤਿ ਕਰੇ ਦਾਤਾਰੁ ॥ ਫੇਰਿ ਕਿ ਅਗੈ ਰਖੀਐ ਜਿਤੁ ਦਿਸੈ ਦਰਬਾਰੁ ॥ ਮੁਹੌ ਕਿ ਬੋਲਣੁ ਬੋਲੀਐ ਜਿਤੁ ਸੁਣਿ ਧਰੇ ਪਿਆਰੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲਾ ਸਚੁ ਨਾਉ ਵਡਿਆਈ ਵੀਚਾਰੁ ॥ ਕਰਮੀ ਆਵੈ ਕਪੜਾ ਨਦਰੀ ਮੋਖੁ ਦੁਆਰੁ ॥ ਨਾਨਕ ਏਵੈ ਜਾਣੀਐ ਸਭੁ ਆਪੇ ਸਚਿਆਰੁ ॥੪॥ ਥਾਪਿਆ ਨ ਜਾਇ ਕੀਤਾ ਨ ਹੋਇ ॥ ਆਪੇ ਆਪਿ ਨਿਰੰਜਨੁ ਸੋਇ ॥ ਜਿਨਿ ਸੇਵਿਆ ਤਿਨਿ ਪਾਇਆ ਮਾਨੁ ॥ ਨਾਨਕ ਗਾਵੀਐ ਗੁਣੀ ਨਿਧਾਨੁ ॥ ਗਾਵੀਐ ਸੁਣੀਐ ਮਨਿ ਰਖੀਐ ਭਾਉ ॥ ਦੁਖੁ ਪਰਹਰਿ ਸੁਖੁ ਘਰਿ ਲੈ ਜਾਇ ॥ ਗੁਰਮੁਖਿ ਨਾਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਵੇਦੰ ਗੁਰਮੁਖਿ ਰਹਿਆ ਸਮਾਈ ॥ ਗੁਰੁ ਈਸਰੁ ਗੁਰੁ ਗੋਰਖੁ ਬਰਮਾ ਗੁਰੁ ਪਾਰਬਤੀ ਮਾਈ ॥ ਜੇ ਹਉ ਜਾਣਾ ਆਖਾ ਨਾਹੀ ਕਹਣਾ ਕਥਨੁ ਨ ਜਾਈ ॥ ਗੁਰਾ ਇਕ ਦੇਹਿ ਬੁਝਾਈ ॥ ਸਭਨਾ ਜੀਆ ਕਾ ਇਕੁ ਦਾਤਾ ਸੋ ਮੈ ਵਿਸਰਿ ਨ ਜਾਈ ॥੫॥

MCNG-3322

ਅਰਦਾਸ

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ॥ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ॥ ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਿਸ਼ਾਹੀ ੧੦॥

[illegible]

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖਾਲਸਾ॥ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ॥

MCNG-3323

ਅਰਦਾਸ

ੴ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ ॥ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਸਹਾਇ ॥ ਵਾਰ ਸ੍ਰੀ ਭਗੌਤੀ ਜੀ ਕੀ ਪਾਤਿਸ਼ਾਹੀ ੧੦ ॥

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕਾ ਖ਼ਾਲਸਾ ॥ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ ॥

MCNG-3324

साँई सार

- जिस तरह कीड़ा कपड़ों को कुतर डालता है, उसी तरह ईर्ष्या मनुष्य को।
- क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चाताप पर समाप्त होता है।
- एक बार निकले बोल वापस नहीं आ सकते, इसलिये सोच कर बोलो।
- तलवार की चोट उतनी तेज नहीं होती, जितनी जिह्वा की।
- धीरज के सामने भयंकर संकट भी धुएँ के बादलों की तरह उड़ जाते है
- तीन सच्चे मित्र हैं - बूढ़ी पत्नी, पुराना कुत्ता और पास का धन।
- मनुष्य की महत्ता उसके कपड़ों से नहीं बल्कि उसके आचरण से जानी जाती है।
- मनुष्य के तीन सद्गुण हैं –आशा, विश्वास और दान।
- भूत से प्रेरणा लेकर वर्तमान में भविष्य का चिन्तन करना चाहिये।
- सम्पन्नता मित्रता बढ़ाती है, विपदा उसकी परख करती है।
- मनुष्य के रूप में परमात्मा सदा हमारे सम्मुख है, उसकी सेवा करो
- नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश में हो जाते हैं।
- प्रेम मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाला चुम्बक है।
- अन्धा वह नहीं है जिसके आँखें नहीं, अन्धा वह है जो अपने दोषों को ढकता है।
- दूसरों के प्रति ऐसा व्यवहार करना चाहिए, जैसा हम अपने लिए पसन्द करते हैं।
- दूसरे को गिराने के प्रयत्न में तुम स्वयं गिर जाओगे।
- चिन्ता से रूप, बल और ज्ञान का नाश होता है।
- घर में मेल होना पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है।

MCNG-3325

مُحَمَّد
الله
۷۸۶
انك لمن المرسلين على صراط مستقيم
وما ارسلنك الا رحمة للعالمين
لا اله الا الله محمد رسول الله

قُل
قُل
قُل
قُل
آية الكرسي
الله
محمد
ابو بكر
عمر
عثمان
علی
يا الله
يا رحمن
يا رحيم
يا مالك
يا رزاق
يا قادر
الحمد لله

MCNG-3329

MCNG-3330